यूको कोलकाता वार्ता

कोलकाता अंचल - छमाही पत्रिका

अंक-1, अप्रैल, 2025 - सितंबर, 2025

तमसो मा ज्योतिर्गमय

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

यूको राजभाषा मिशन

" राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी
का बैंक बनने हेतु,
बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को
राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा
दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं
राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,
नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,
बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए
बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना "

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन नें पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

नराकास (बैंक), कोलकाता
80वीं अर्द्धवार्षिक बैठक
TOLIC (Bank), Kolkata
80th Half Yearly Meeting
दिनांक/Date: 31.10.2025
संयोजक/Convener
यूको बैंक
UCO BANK
Honours Your Trust

नराकास (बैंक), कोलकाता की
79वीं छमाही बैठक
TOLIC (Bank), Kolkata
79th Half Yearly Meeting
दिनांक/Date: 20.05.2025
संयोजक/Convener
यूको बैंक UCO BANK

संरक्षक
मनीष कुमार
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

संपादक मंडल
इस्मत जहाँ
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

संपादन
पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

अनुक्रमणिका

अंचल प्रमुख की कलम से	4
उपअंचल प्रमुख की कलम से	5
संपादकीय	6
राजभाषा कार्यान्वयन	7
सरकारी प्रयास : भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना	8
स्वामी विवेकानन्द	9-12
कॉलेज स्ट्रीट	13
अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला	14-15
हिंदी दिवस माननीय गृह मंत्री का संदेश	16-18
हिंदी पखवाड़ा-2025	19-20
स्वच्छोत्सव अभियान-2025	21-23
नराकास सम्मान	23
अंचल कार्यालय कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	24
सामान्यजन के लिए बीमा का महत्व	25-27
एमएसए : कारण, चुनौतियाँ एवं समाधान	28-29
काव्य : प्रभु मिलन की लालसा	29
कासा शिविर	30
विगत वर्ष की उपलब्धियाँ यूको जी.डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला 2024-25	31
यूको राजभाषा सम्मान 2024-25 एवं लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रायोजन	32
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा निरीक्षण	33
साइबर सुरक्षा	34-37
प्रेरक प्रसंग : चित्रकार की गलती	38
वंदे मातरम्	39
यूको राजभाषा प्रतिज्ञा	40

संपर्क सूत्र
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, कोलकाता, 5, लाला लाजपत राय सरणी, प्रथम तल, कोलकाता-700020
दूरभाष : 033-4455 9102, ई-मेल : zo.calcutta@uco.bank.in
पत्रिका में प्रकाशित विचार संबंधित रचनाकारों के अपने विचार हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अंचल प्रमुख की कलम से

साथियो,

अंचल कार्यालय, कोलकाता की छमाही पत्रिका 'यूको कोलकाता वार्ता' का प्रथम अंक (अप्रैल, 2025 - सितंबर, 2025) आपको समर्पित करते हुए मैं हर्षित हूँ।

हम प्रयास करेंगे कि पत्रिका के माध्यम से कोलकाता अंचल की कारोबारी गतिविधियों के साथ-साथ अन्य सभी गतिविधियों से आपको अवगत कराते रहे। कोलकाता अंचालाधीन सभी स्टाफसदस्यों से आग्रह है कि 'यूको कोलकाता वार्ता' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ प्रेषित करें।

अंचल कार्यालय, कोलकाता नराकास (बैंक), कोलकाता की सदस्य है। नराकास स्तर पर अंचल कार्यालय, कोलकाता को वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु प्रशासनिक संवर्ग में बेहतर कार्य करने हेतु प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्वनी कुमार जी के द्वारा सम्मानित किया गया। सभी स्टाफसदस्यों को इस हेतु हार्दिक बधाई।

साथियो, कोलकाता अंचल में कारोबार वृद्धि की अपार संभावनाएँ है। हमें कासा वृद्धि पर विशेष ध्यान देना है। रिटेल एवं एमएसएमई ऋण प्रदान करते समय ऋण की गुणवत्ता को महत्व देना है। ऋण खातों की उचित निगरानी हमे समयबद्ध तरीके से करनी है। सभी ग्राहकों को डिजिटल उत्पादों के तहत पंजीकृत कराना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। केंद्र /राज्य सरकार समर्थित योजनाओं को सफल बनाने में हमें सक्रिय भूमिका निभानी है।

ग्राहक ही हमारे कारोबार के आधार हैं। हमें अपने ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करनी है। एक संतुष्ट ग्राहक हमारे कारोबार को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। ग्राहकों की शिकायतों का त्वरित निपटान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

शुभकामनाओं सहित--

मनीष कुमार
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख की कलम से

साथियो,

आपको सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि अंचल कार्यालय, कोलकाता से छमाही पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हो रहा है। अंचल कार्यालय, कोलकाता की छमाही पत्रिका 'यूको कोलकाता वार्ता' का प्रथम अंक (अप्रैल, 2025 - सितंबर, 2025) आपको समर्पित है।

'यूको कोलकाता वार्ता' पत्रिका कोलकाता अंचल की सभी गतिविधियों को प्रदर्शित करने हेतु एक सशक्तमंच प्रदान करेगी। पत्रिका को सफल बनाना सभी स्टाफसदस्यों का दायित्व है।

साथियो भाषा संवाद का सशक्त माध्यम है। सेवा क्षेत्र से जुड़े होने के कारण हमारा दायित्व है कि हम ग्राहक को उसकी भाषा में सेवा प्रदान करें। अतः हमें हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा को सीखने एवं उसमें संवाद करने का हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए।

साथियो शाखा स्तर पर हमें राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करना है। वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु वार्षिक कार्यक्रम में 'ग' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निर्धारित सभी लक्ष्यों की प्राप्ति करनी है।

शुभकामनाओं सहित

इस्मत जहाँ

सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

संपादकीय

साथियो,

अंचल कार्यालय, कोलकाता की छमाही गृह पत्रिका 'यूको कोलकाता वार्ता' के प्रथम अंक के प्रकाशन पर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

पत्रिका का यह अंक कोलकाता अंचल की विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों का सुंदर गुलदस्ता है। कोलकाता अंचल कारोबार के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। नराकास स्तर पर अंचल कार्यालय, कोलकाता का प्रदर्शन स्तरीय है। नराकास (बैंक) कोलकाता द्वारा अंचल कार्यालय, कोलकाता को वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु प्रशासनिक संवर्ग में राजभाषा का बेहतर कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने हेतु सम्मानित किया गया। कोलकाता अंचलाधीन सभी स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

इस अंक में स्वामी विवेकानद की जीवन यात्रा एवं उनके अनमोल विचारों पर आधारित एक सुंदर आलेख शामिल है। कोलकाता स्थित किताबों की कालोनी नाम से प्रसिद्ध 'कॉलेज स्ट्रीट' एवं विश्व प्रसिद्ध कोलकाता के 'अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला' का सुन्दर चित्रण है। हिंदी पखवाड़ा - 2025 एवं स्वच्छोत्सव अभियान - 2025 के आयोजन की झलकियाँ शामिल है।

सामान्य जन के लिए सामान्य बीमा का महत्व एवं एसएमए-कारण, चुनौतियाँ एवं समाधान विषय पर आलेख सम्मिलित है। संकल्प राजभाषा की गतिविधियों की झलकियाँ एवं साइबर धोखाधड़ी से बचाव हेतु साइबर सुरक्षा के उपाय भी शामिल है।

सभी यूकोजन को बैंक के 84वें स्थापना दिवस की अग्रिम शुभकामनाओं सहित--

पूनम कुमारी प्रसाद

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

राजभाषा कार्यान्वयन

वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक कार्यक्रम

वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के अनुसार 'ग' क्षेत्र हेतु हिंदी/द्विभाषी में मूल पत्राचार हेतु निर्धारित लक्ष्य 60% है।
वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के अनुसार 'ग' क्षेत्र हेतु हिंदी/द्विभाषी टिप्पण लेखन हेतु निर्धारित लक्ष्य 35% है।
वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के अनुसार शाखा निरीक्षण हेतु निर्धारित लक्ष्य 30% है।

बैंकिंग शब्दावली

सुस्थिर प्रतिभूति, ठोस जमानत	Seasoned Security
अपरिवर्ती /स्थिर उपरी लागत	Fixed Overhead Cost
परिक्रामी नकद ऋण	Revolving Cash Credit
नियत किस्त पद्धति	Fixed Installment Method
कार्य व्याप्ति	Functional duty
मध्यम हुंडी	Second class paper
निधि निर्माण	Generation of funds
निर्बाध बैंकिंग	Free Banking
मुक्त वस्तुएँ	Free articles
दुर्लभ बचत	Scarce Saving
निर्धारित ब्याज	Schedule Interest

बैंकिंग टिप्पणी

कृपया उक्त विषय पर संदर्भ देखें	Please refer to the above topic.
अनुमोदनार्थ/अनुमोदन के लिए	For Approval
मसौदा यथा संशोधित रूप में अनुमोदित किया जाता है	Draft approved as amended
कृपया आवश्यक कार्रवाई करें	Please do the needful.
तदनुसार सूचित किया जाए	May be informed accordingly
कृपया मामले का निपटान करें	Please settle the matter.
अनुपालन सुनिश्चित करें	Ensure the compliance
कृपया, चर्चा करें	Please discuss
सर्वोच्च प्राथमिकता दें	Give Top Priority
नोट किया	Noted

सरकारी प्रयास - भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना

आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को केंद्र में रखकर, भारत सरकार ने 'वोकल फॉर लोकल' (स्थानीय के लिए मुखर) को ध्यान में रखते हुए विभिन्न भारतीय भाषाओं को प्रशासनिक क्षेत्र में प्रभावी एवं सशक्तढंग से लागू कराने हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत एक नए विभाग भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया। 6 जून, 2025 को केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने भारतीय भाषा अनुभाग मंच को देश को समर्पित किया। इस अनुभाग को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में विदेशी भाषाओं खासकर अंग्रेजी पर निर्भरता को समाप्त करना और विभिन्न भारतीय भाषाओं की भाषायी विविधता को बढ़ाना तथा मातृभाषा में सोच, विश्लेषण व निर्णय प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना है।

गृह मंत्रालय में राजभाषा प्रभाग की सचिव सुश्री अंशुली आर्या ने 13 सितंबर, 2024 को कहा था कि राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार क्षेत्र क, ख, एवं ग के राज्यों के साथ केंद्र के पत्राचार की भाषा निर्दिष्ट करते हैं। नियमों में कहा गया है कि केंद्र सरकार के किसी कार्यालय से 'ग' क्षेत्र के राज्यों जैसे तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक, के साथ पत्राचार अँग्रेजी में होगा।

सुश्री अंशुली आर्या ने कहा था कि वर्तमान में हम राजभाषा नियम 1976 के तहत अँग्रेजी और हिंदी में काम करते हैं। अगर हमें 'ग' क्षेत्र स्थित राज्यों को कोई पत्र भेजना है, तो यह अँग्रेजी में होगा। 'ग' क्षेत्र स्थित राज्यों को लगता हैं कि उनकी अपनी भाषा केंद्र में नहीं आ पा रही हैं। प्रधानमंत्री ने इस पहलू पर काम किया है, उनके भाषणों का तत्काल अनुवाद किया जाता है। हम सार्वभौमिक अनुवाद के लिए भारतीय भाषा अनुभाग बना रहे हैं। हमने सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग (सी-डैक) को इसमें शामिल किया है। अगर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री द्वारा तमिल में लिखे गए पत्र का उत्तर मंत्री को देना है, तो उसका उत्तर तमिल में दिया जाएगा। राज्यों की अपनी आधिकारिक भाषाएँ हैं, और भारतीय भाषा अनुभाग अनुवाद कार्य में मदद करेगा।'

भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना भारत सरकार की उपनिवेशवाद-विरोधी परियोजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य आधिकारिक संदर्भों में स्थानीय भाषाओं को मजबूत करना है।

यह क्षेत्रीय भाषाओं को केंद्र स्तर पर लाने और केंद्र राज्य सरकार को समावेशी बनाने में मदद करेगा। राजभाषा विभाग को इस पहल के माध्यम से एक पूर्ण विभाग का दर्जा प्राप्त हुआ है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के उस सिद्धांत से जुड़ी है, जो मातृभाषा आधारित शिक्षा और प्रशासन पर ज़ोर देती है। इस अनुभाग के विकास के लिए केंद्रीय बजट 2024-25 में 56 करोड़ रुपए आबंटित किए गए है।

भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना के असवर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा था कि यह प्रशासन को विदेशी भाषाओं के प्रभाव से मुक्त करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। हमारी क्षमता का पूर्ण दोहन तभी हो सकता है जब हमारी चिंतन, विश्लेषण और निर्णय लेने की प्रतिक्रियाएँ हमारी मातृभाषा में हों। देश की सभी स्थानीय भाषाओं को सशक्त बनाकर ही हम भारत को उसके शाश्वत गौरवशाली स्थान पर पहुंचा सकते हैं। हमारे प्रत्येक भाषा अन्य भाषाओं से पूर्णतः जुड़ी हुई हैं और सभी भाषाओं का विकास एक-दूसरे के बिना संभव नहीं है। हमारी सभी भाषा रूपी नदियाँ मिलकर भारतीय संस्कृति के महासागर का निर्माण करती है। भारतीय भाषाएँ हमारी संस्कृति की आत्मा है और हमारी संस्कृति भारत की आत्मा है। यह अनुभाग भारत की भाषाई विविधता को समाहित कराते हुए सभी भाषाओं को एक सशक्त और संगठित मंच प्रदान करेगा। तकनीक का उपयोग सभी भाषाओं की भावना, समृद्धि और संवेदनशीलता को कम किए बिना किया जाना चाहिए। हम पर अंग्रेजी थोपे जाने के खिलाफलड़ाई में, हम अवश्य जीतेंगे।

निश्चित रूप से भारतीय भाषा अनुभाग राजभाषा नियम 1976 के अनुपालन के क्रम में केंद्र एवं राज्य सरकारों विशेषकर 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र स्थित राज्य सरकारों के बीच हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में पत्राचार को सुगम एवं प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने में मील का पत्थर है। भारत सरकार हिंदी के साथ-साथ अन्य सभी क्षेत्रीय/स्थानीय भाषाओं के विकास एवं प्रसार-प्रचार हेतु सार्थक प्रयास कर रही है, भारतीय भाषा अनुभाग इस प्रयास की दिशा में सबसे प्रभावी कदम है।

जय हिंद - जय भारत

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय, कोलकाता

स्वामी विवेकानन्द

विचार व्यक्तित्त्व की जननी है, जो आप सोचते हैं बन जाते है।

स्वामी विवेकानन्द (12 जनवरी 1863 - 4 जुलाई 1902) वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। वे एक समृद्ध और शिक्षित परिवार में पैदा हुए थे, जिसके कारण उन्हें बचपन से ही अच्छे संस्कार और शिक्षा प्राप्त हुई। उनके पिता, विश्वनाथ दत्त, एक प्रतिष्ठित वकील थे और मां भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक और अत्यंत सरल स्वभाव की महिला थीं। स्वामी विवेकानंद का पालन-पोषण एक ऐसे वातावरण में हुआ, जो धार्मिकता, अध्यात्म, और ऊच्च संस्कारों से भरा हुआ था। उनके माता-पिता ने उन्हें बहुत अच्छे संस्कार दिए और छोटी उम्र में ही स्वामी विवेकानंद में गहरी धार्मिक भावना और अध्ययन की इच्छा देखने को मिली।

गौड़ मोहन मुखर्जी स्ट्रीट कोलकाता स्थित स्वामी विवेकानन्द का मूल जन्म स्थान जिसका पुनरुद्धार करके अब सांस्कृतिक केन्द्र का रूप दे दिया गया है।

स्वामी विवेकानंद के प्रारंभिक शिक्षा का आरंभ कलकत्ता के प्रिंस बयल स्कूल से हुआ था, जहां उन्होंने अपनी शिक्षा की नींव रखी। वे एक मेधावी छात्र थे और उनके विद्यालय में हर विषय में उत्कृष्टता प्राप्त की। वे विशेष रूप से इतिहास, संस्कृत और दर्शनशास्त्र में रुचि रखते थे। उनकी धार्मिकता के प्रति रुचि और ज्ञान की प्यास इतनी गहरी थी कि वे अक्सर अपने गुरु से या अपने साथियों से जीवन के गूढ़ सवालों के बारे में पूछा करते थे। उनकी यह जिज्ञासा उन्हें जल्द ही एक खोजी और ज्ञानवर्धक मार्ग पर ले गई।

स्वामी विवेकानंद के बचपन और युवावस्था में ही उनके मन में भारतीय संस्कृति और समाज की बेहतरी के लिए एक जुनून और प्रतिबद्धता पैदा हो गई थी। उन्होंने अपने जीवन के पहले दिनों में ही समाज में व्याप्त अंधविश्वास, भेदभाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाना शुरूकर दिया था। उनका यह मानना था कि भारतीय समाज को पुनः जागृत करने और उसे अपनी पुरानी महानता की ओर वापस लौटने की जरूरत थी।

स्वामी विवेकानंद का मननशील और विचारशील स्वभाव था, जो उन्हें सामान्य बच्चों से अलग करता था। वे एक समय में दो अलग-अलग तरह की मानसिकता रखते थे एक तरफवे धार्मिक गुरुओं की शिक्षाओं को गहराई से समझने की कोशिश करते थे, तो दूसरी ओर वे पश्चिमी विचारधारा और विज्ञान के प्रति भी गहरी रुचि रखते थे।

स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस से शिक्षा ली और उनके दर्शन को आत्मसात किया। वे अपने गुरु रामकृष्ण

देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवों मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं; इसलिए मानव जाति की सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। यही वह समय था जब वे अपने जीवन के उद्देश्य और मार्ग पर स्पष्ट रूप से अग्रसर हुए। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश भारत में तत्कालीन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया।

बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया।

स्वामी विवेकानन्द शिकागो के विश्व धर्म परिषद में बैठे हुए

विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त संन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

विवेकानन्द का योगदान तथा महत्व

रोमां रोलां ने उनके बारे में कहा था-'उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असम्भव है, वे जहाँ भी गये, सर्वप्रथम ही रहे। हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता था। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देख ठिठक कर रुक गया और आश्चर्यपूर्वक चिल्ला उठा-'शिव !' यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।'

वे केवल सन्त ही नहीं, एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव-प्रेमी भी थे। अमेरिका से लौटकर उन्होंने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था- 'नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भूँजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से; निकल पडे झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।' और जनता ने स्वामी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। महात्मा गांधी को आजादी की लड़ाई में जो जन-समर्थन मिला, वह विवेकानन्द के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के भी एक प्रमुख प्रेरणा के स्रोत बने। उनका विश्वास था कि पवित्र भारतवर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्यभूमि है। यहीं बड़े-बड़े महात्माओं व ऋषियों का जन्म हुआ, यही संन्यास एवं त्याग की भूमि है तथा यहीं-केवल यहीं-आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य के लिये जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है।

उनके कथन--'उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ। अपने नर-जन्म को सफल करो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।'

उन्नीसवीं सदी के आखिरी वर्षों में विवेकानन्द लगभग सशस्त्र या हिंसक क्रान्ति के जरिये भी देश को आजाद कराना चाहते थे। परन्तु उन्हें जल्द ही यह विश्वास हो गया था कि परिस्थितियाँ उन इरादों के लिये अभी परिपक्व नहीं हैं। इसके बाद ही विवेकानन्द ने 'एकला चलो' की नीति का पालन करते हुए एक परिव्राजक के रूप में भारत और दुनिया को खंगाल डाला।

उन्होंने कहा था कि मुझे बहुत से युवा संन्यासी चाहिये जो भारत के ग्रामों में फैलकर देशवासियों की सेवा में खप जायें। उनका यह सपना पूरा नहीं हुआ। विवेकानन्द पुरोहितवाद, धार्मिक आडम्बरों, कठमुल्लापन और रूढ़ियों के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने धर्म को मनुष्य की सेवा के केन्द्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उन्होंने धर्म को रूढ़ियों से मुक्त कर समाज-सेवा से जोड़ने की वकालत की।

उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया था कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी देवताओं की तरह मन्दिरों में स्थापित कर दिया जाये और मन्दिरों से देवी-देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाये।

उनका यह कालजयी आह्वान इक्कीसवीं सदी के पहले दशक के अन्त में एक बड़ा प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा करता है। उनके इस आह्वान को सुनकर पूरे पुरोहित वर्ग की घिग्घी बँध गई थी। आज कोई दूसरा साधु तो क्या सरकारी मशीनरी भी किसी अवैध मन्दिर की मूर्ति को हटाने का जोखिम नहीं उठा सकती। विवेकानन्द के जीवन की अन्तर्लय यही थी कि वे इस बात से आश्वस्त थे कि धरती की गोद में यदि ऐसा कोई देश है जिसने मनुष्य की हर तरह की बेहतरी के लिए ईमानदार कोशिशें की हैं, तो वह भारत ही है।

उन्होंने पुरोहितवाद, ब्राह्मणवाद, धार्मिक कर्मकाण्ड और रूढ़ियों की खिल्ली भी उड़ायी और लगभग आक्रमणकारी भाषा में ऐसी विसंगतियों के खिलाफ युद्ध भी किया। उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म के सर्वश्रेष्ठ चिन्तकों के विचारों का निचोड़ पूरी दुनिया के लिए अब भी ईर्ष्या का विषय है। स्वामी ने संकेत दिया था कि विदेशों में भौतिक समृद्धि तो है और उसकी भारत को जरूरत भी है लेकिन हमें याचक नहीं बनना चाहिये। हमारे पास उससे ज्यादा बहुत कुछ है जो हम पश्चिम को दे सकते हैं और पश्चिम को उसकी सख्त जरूरत है।

यह स्वामी विवेकानन्द का अपने देश की धरोहर के लिये दम्भ या बड़बोलापन नहीं था। यह एक वेदान्ती साधु की भारतीय सभ्यता और संस्कृति की तटस्थ, वस्तुपरक और मूल्यगत आलोचना थी। बीसवीं सदी के इतिहास ने बाद में उसी पर मुहर लगायी।

बेलूर मठ स्थित स्वामी विवेकानन्द मन्दिर

विवेकानंद ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यानों की प्रसिद्धि विश्व भर में है। जीवन के अन्तिम दिन उन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या की और कहा--'एक और विवेकानन्द चाहिये, यह समझाने के लिये कि इस विवेकानन्द ने अब तक क्या किया है।' उनके शिष्यों के अनुसार जीवन के अन्तिम दिन 4 जुलाई 1902 को भी उन्होंने अपनी ध्यान करने की दिनचर्या को नहीं बदला और प्रातः दो तीन घण्टे ध्यान किया और ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मरन्ध्र को भेदकर महासमाधि ले ली। बेलूर में गंगा तट पर चन्दन की चिता पर उनकी अंत्येष्टि की गयी। इसी गंगा तट के दूसरी ओर उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का सोलह वर्ष पूर्व अन्तिम संस्कार हुआ था।

बेलूर मठ स्थित स्वामी विवेकानन्द मन्दिर

उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनकी स्मृति में वहाँ एक मन्दिर बनवाया और समूचे विश्व में विवेकानन्द तथा उनके गुरु रामकृष्ण के सन्देशों के प्रचार के लिये 130 से अधिक केन्द्रों की स्थापना की। इनका एक प्रसिद्ध कथन था उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –

- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
- बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
- धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए।
- शिक्षा, गुरू गृह में प्राप्त की जा सकती है।

● सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जान चाहिये।

● देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

● मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिए।

● शिक्षा ऐसी हो जो सीखने वाले को जीवन संघर्ष से लड़ने की शक्ति दे।

स्वामी विवेकानन्द के अनमोल वचन

● उठो जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता।

● हर आत्मा ईश्वर से जुड़ी है, करना ये है कि हम इसकी दिव्यता को पहचाने अपने आप को अंदर या बाहर से सुधार कर। कर्म, पूजा, अंतर मन या जीवन दर्शन इनमें से किसी एक या सब से ऐसा किया जा सकता है और फिर अपने आपको खोल दें। यही सभी धर्मो का सारांश है। मंदिर, परंपराएं, किताबें या पढ़ाई ये सब इससे कम महत्वपूर्ण है।

● एक विचार लें और इसे ही अपनी जिंदगी का एकमात्र विचार बना लें। इसी विचार के बारे में सोचे, सपना देखे और इसी विचार पर जिएं। आपके मस्तिष्क, दिमाग और रगों में यही एक विचार भर जाए। यही सफलता का रास्ता है। इसी तरह से बड़े-बड़े आध्यात्मिक धर्म पुरुष बनते हैं।

● एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकि सब कुछ भूल जाओ।

● एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजारों बार ठोकर खाने के बाद ही होता है।

● खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।

● बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप है।

● विश्व एक विशाल व्यायामशाला है जहाँ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।

● शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु है। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु है।

● जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।

● जो कुछ भी तुमको कमजोर बनाता है - शारीरिक, बौद्धिक या मानसिक उसे जहर की तरह त्याग दो।

● स्वामी विवेकानंद ने कहा था – चिंतन करो, चिंता नहीं, नए विचारों को जन्म दो।

राहुल भट्टाचार्या
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कोलकाता

सुविचार

एक अच्छा विचार
कई बुरे विचारों को
नष्ट कर सकता है।

कॉलेज स्ट्रीट

कॉलेज स्ट्रीट पश्चिम बंगाल राज्य के सेंट्रल कोलकाता में 900 मीटर लंबी सड़क है। इसे बोई पारा (किताबों की कॉलोनी) के नाम से भी जाना जाता है। यह बिधान सरणी रोड से शुरू होकर एमजी रोड क्रॉसिंग और सूर्य सेन स्ट्रीट क्रॉसिंग होते हुए बहुबाजार तक फैली हुई है। इसका नाम यहाँ मौजूद कई महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों जैसे कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता मेडिकल कॉलेज, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, द संस्कृत महाविद्यालय एंड विश्वविद्यालय, सिटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन आदि के कारण पड़ा है। इस सड़क पर बौद्धिक गतिविधियों के कई केंद्र हैं, खासकर इंडियन कॉफी हाऊस, एक कैफे जिसने दशकों से शहर के बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया है। कॉलेज स्ट्रीट भारत के साथ-साथ एशिया का सबसे बड़ा किताबों का बाज़ार के साथ पूरी दुनिया में सेकंड हैंड किताबों का सबसे बड़ा बाजार है।

कॉलेज स्ट्रीट अपनी छोटी और बड़ी किताबों की दुकानों के लिए मशहूर है, जिसकी वजह से इसे बोईपारा (किताबों की कॉलोनी) का उपनाम मिला है। पूरे शहर और राज्य के अलग-अलग हिस्सों से लोग किताबों के लिए फुटपाथ पर मौजूद अनगिनत किताबों की दुकानों पर आते हैं। बंगाली पब्लिकेशन इंडस्ट्री के कई बड़े नाम (जैसे : आनंद पब्लिशर्स, मित्रा एंड घोष पब्लिशर्स, दासगुप्ता एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, डेज़ पब्लिशिंग आदि) यहाँ स्थित हैं।

स्मिथसोनियन पत्रिका के एक लेख में कॉलेज स्ट्रीट का वर्णन इस तरह किया गया है...आधा मील लंबी किताबों की दुकानें और दुकान फुटपाथ पर फैले हुए हैं, जिनमें हर भारतीय भाषा में फर्स्ट एडिशन, पैम्पलेट, पेपरबैक हैं, साथ ही फ्रांस, जर्मनी, रूस और इंग्लैंड की छपी और बिना छपी किताबों का भी अच्छा-खासा संग्रह है। यहाँ दुर्लभ किताबें बहुत कम कीमत पर खरीदी जा सकती हैं और खूब मोलभाव होता है।'

2007 में, कॉलेज स्ट्रीट भारत के उन मशहूर जगहों में शामिल हुई, जिन्हें 6 पी.एम. से 9 पी.एम. मैगज़ीन की 'बेस्ट ऑफएशिया' सूची में जगह मिली।

इस सड़क पर स्थित जाने-माने शैक्षणिक संस्थानों में शामिल उच्च शिक्षा संस्थान :

- प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना 1817 में हिंदू कॉलेज के रूप में हुई थी, जो इसे दक्षिण एशिया के सबसे पुराने पोस्ट सेकेंडरी लिबरल आर्ट्स महाविद्यालयों में से एक बनाता है।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना 1857 में हुई थी और दक्षिण एशिया में पहला विश्वविद्यालय है।
- मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल, कोलकाता, 1835 में स्थापित, एशिया में यूरोपीय मेडिसिन का पहला महाविद्यालय है।
- संस्कृत महाविद्यालय और विश्वविद्यालय, 1824 में स्थापित है।
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वेलफेयर एंड बिजनेस मैनेजमेंट, 1953 में स्थापित और कलकत्ता विश्वविद्यालय से जुड़ा हुआ है। यह भारत का पहला एमबीए कराने वाला इंस्टीट्यूट है।
- हेयर स्कूल, 1818 में स्थापित।
- हिंदू स्कूल, 1817 में स्थापित।

अंकित नौवियाल
सहायक प्रबंधक
एल.एल.आर. सरणी शाखा

अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला

अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला (पहले कलकत्ता बुक फेयर) कोलकाता में सर्दियों का एक मेला है। यह एक अनोखा पुस्तक मेला है क्योंकि यह कोई व्यापारिक मेला नहीं है। यह पुस्तक मेला थोक विक्रेता के बजाय मुख्य रूप से आम जनता के लिए होता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा गैर-व्यापारिक पुस्तक मेला तथा एशिया का सबसे बड़ा पुस्तक मेला (प्रकाशकों के हिसाब से) और दुनिया का सबसे अधिक उपस्थिति दर्ज कराने वाला पुस्तक मेला है। फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला और लंदन पुस्तक मेला के बाद यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सालाना किताबों का समूह है। कई कोलकाता वासी पुस्तक मेला को कोलकाता का एक अहम हिस्सा मानते हैं। 2 मिलियन से ज्यादा लोगों के आने के साथ, यह उपस्थिति के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा पुस्तक मेला है।

यह मेला पहले मैदान में लगता था। 1991 में मैदान के दूसरे छोर से बेहतर सड़क और रेल नेटवर्क होने की वजह से इसे मैदान के पार्क स्ट्रीट वाले हिस्से में लगाया जा रहा था। साल 2009 से, यह मेला ई.एम. बाईपास पर साइंस सिटी के पास मिलन मेला में अपनी नई जगह पर लग रहा है।

1980 के दशक और 1990 के दशक की शुरुआत में, कोलकाता में दो सालाना पुस्तक मेलें लगते थे, एक कोलकाता पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स गिल्ड द्वारा और दूसरा पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा -- ग्रन्थो मेला ('ग्रन्थो' किताब के लिए एक पुराना बंगाली शब्द है)। 'ग्रन्थो मेला' दिसंबर के आखिर से जनवरी की शुरुआत तक लगता था और यह सरकारी पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित की गई किताबों को प्रदर्शित किया जाता था। 'कोलकाता पुस्तक मेला' की

अभूतपूर्व लोकप्रियता के कारण पश्चिम बंगाल सरकार ने 1992 में दोनों पुस्तक मेले को मिला दिया।

मेले में बांग्लादेश कॉम्प्लेक्स, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, अफ्रीकी संघ, जापान, स्पेन, इटली, यूरोपीय संघ, स्वीडन, रोमानिया, लैटिन अमेरिकी देश, वियतनाम, क्यूबा आदि कई देशों से प्रतिभागिता की जाती है।

साथ ही भारत के अन्य हिस्सों जैसे आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, कश्मीर, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, झारखंड आदि राज्य भी शामिल होते हैं।

मेले में विभिन्न बड़े और छोटे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रकाशकों के अलावा, अन्य आकर्षण आईटी पवेलियन, एक लिटिल मैगज़ीन पवेलियन, स्थानीय हस्तशिल्प और कला के साथ-साथ विभिन्न स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के कई दुकानें लगती हैं।

1990 के दशक से, बुक फेयर को सालाना एक थीम पर आधारित किया जाता रहा है। थीम देश के दूतावास को आमतौर पर मेले के मैदान के केंद्र में एक स्टॉल दिया जाता है और कई किताबों की दुकानें अपने संग्रह को मेले की थीम के आधार पर थीम देती हैं। आमतौर पर, मेले के मुख्य अतिथि थीम वाले देश से होते हैं और उनमें गुंटर ग्रास और रिचर्ड डॉकिन्स जैसी जानी-मानी हस्तियाँ शामिल रही है।

कोलकाता पुस्तक मेला में जारी होने वाली किताबों के सभी पहले एडिशन एक विशेष रिलीज़ गैलरी में रखे जाते हैं। पुस्तक मेला के साथ ही कई अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। साहित्यकारों द्वारा सेमिनार और बातचीत की एक श्रृंखला आयोजित की जाती है। स्कूली बच्चों के लिए निबंध लेखन और सामान्य ज्ञान सत्र जैसे प्रतिस्पर्धी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बाल साक्षरता कार्यक्रमों के लिए पैसे जुटाने के लिए 'वॉक फॉर बुक्स' जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। थीम देश के कार्यक्रम, जिसमें मुख्य अतिथि द्वारा एक बातचीत कार्यक्रम भी शामिल किया जाता है। अशोक कुमार सरकार मेमोरियल व्याख्यान, 1984 से डब्ल्यू. ब्रैडफोर्ड विली जैसे जाने-माने प्रकाशकों और शिक्षकों द्वारा दिया जाने वाला वार्षिक व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। कोलकाता पुस्तक मेला मुफ्त प्रचार और विचारों को बढ़ावा देने वाले बहुत से लोगों को आकर्षित करता है।

साल 2026 में, कोलकाता पुस्तक मेला 50वें एडिशन तक पहुंचने वाला पहला और सबसे पुराना भारतीय पुस्तल मेला बन जाएगा। कोलकाता के प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले का 49वां संस्करण आगामी 22 जनवरी से 3 फरवरी 2026 तक साल्टलेक स्थित बोई मेला प्रांगण में आयोजित किया जाएगा। 2027 में आयोजित होने वाले स्वर्ण जयंती पुस्तक मेले के लिए आयोजकों ने एक विशेष पहल शुरूकी है। 1976 से 1996 के बीच मेले में आने वाले लोगों से उनके सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफ साझा करने का अनुरोध किया गया है। इनमें से 50 सर्वश्रेष्ठ तस्वीरें 2026 के मेले के प्रेस कॉर्नर में प्रदर्शित की जाएंगी और प्रारंभिक 50 प्रविष्टियों को एक विशेष एलबम में प्रकाशित किया जाएगा।

राधेश्याम शुक्ला
प्रबंधक, मार्केटिंग
अंचल कार्यालय, कोलकाता

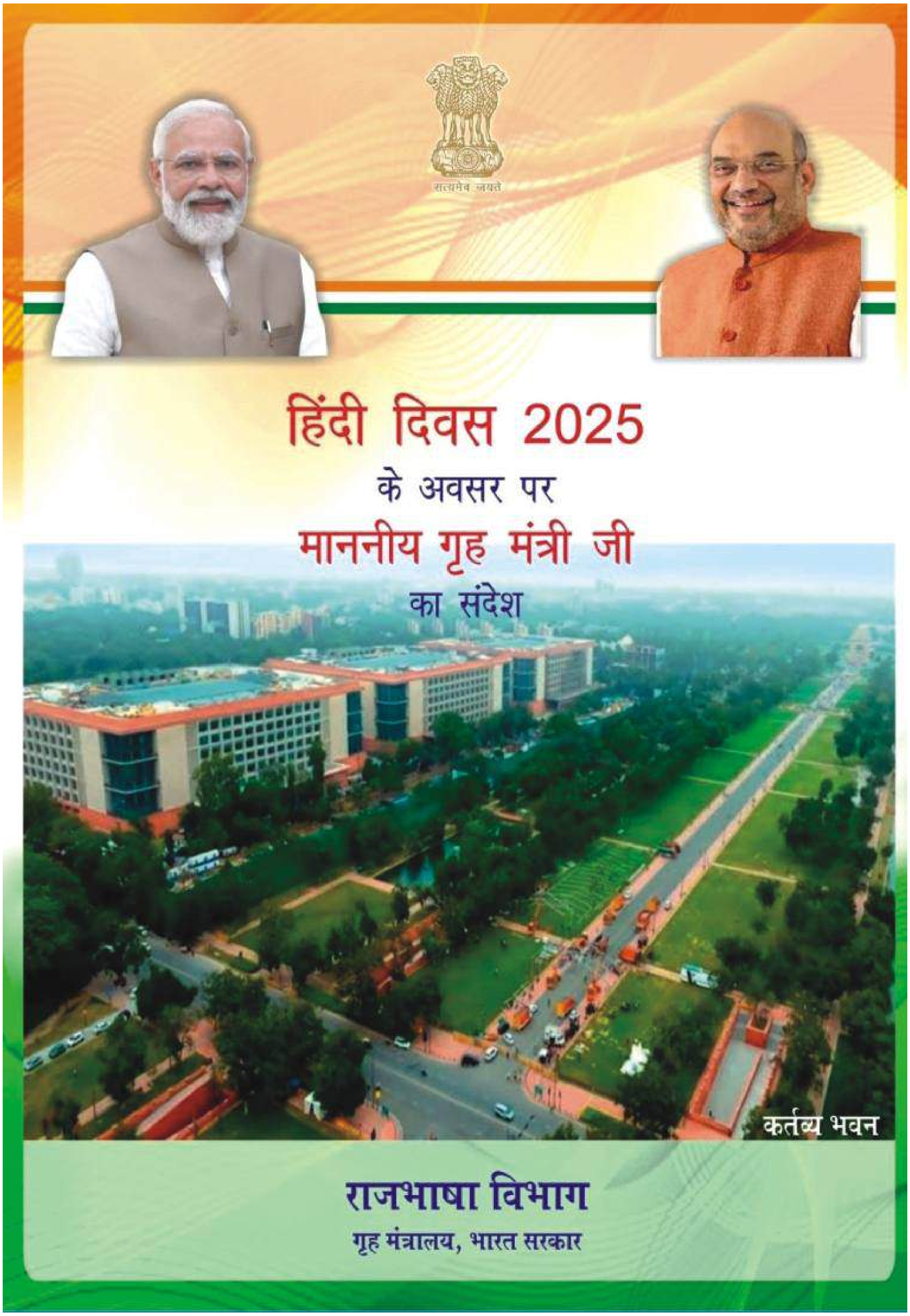
सत्यमेव जयते
हिंदी दिवस 2025
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश
कर्तव्य भवन
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

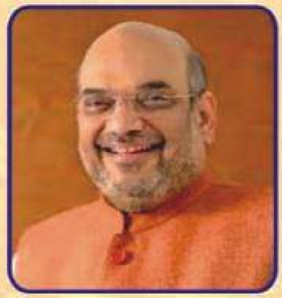

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

हिंदी पखवाड़ा - 2025

भारत सरकार के निर्देशानुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति जागरूकता तथा इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से अंचल कार्यालय, कोलकाता एवं कोलकाता अंचलाधीन शाखाओं में 14 सितंबर से 30 सितंबर, 2025 तक हिंदी पखवाड़ा 2025 का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा - 2025 का शुभारंभ 14 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन से हुआ। हिंदी दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय, कोलकाता में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्वनी कुमार के संदेश का वाचन किया गया तथा सभी स्टाफसदस्यों द्वारा यूको राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान अंचलाधीन सभी संवर्ग के स्टाफ सदस्यों हेतु प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का आयोजन हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी वर्ग के लिए अलग-अलग किया गया था। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार रखे गए थे।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नलिखित है--

1. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (अंचलाधीन सभी कार्यपालकगण हेतु)
2. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (अंचलाधीन सभी अधिकारी एवं कर्मचारी संवर्ग हेतु)
3. आशु भाषण प्रतियोगिता (अंचल कार्य के अधिकारी एवं कर्मचारी संवर्ग हेतु)
4. काव्य पाठ प्रतियोगिता (अंचल कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी संवर्ग हेतु)
5. सुलेख प्रतियोगिता (अंचलाधीन अधीनस्थ संवर्ग हेतु)

दिनांक 31.10.2025 को अंचल कार्यालय, कोलकाता के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री मनीष कुमार की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा-2025 समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय एवं शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने अपने स्वागत संबोधन से कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत की। अपने संबोधन में राजभाषा अधिकारी ने हिंदी दिवस के इतिहास पर संक्षिप्त विचार रखा। कार्यालयों में हिंदी दिवस के आयोजन की प्रासंगिगता एवं अनिवार्यता से स्टाफ सदस्यों को अवगत कराया।

कार्यक्रम में सभी विजेताओं को अंचल प्रमुख एवं उप अंचल प्रमुख के कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को और बेहतर बनाने पर सभी स्टाफसदस्यों ने अपने सुझाव दिए।

अंचल प्रमुख महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में स्टाफसदस्यों को हिंदी राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। दैनिक आधार पर बैंकिंग कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने का सुझाव दिया। उन्होंने स्टाफसदस्यों को वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 में 'ग' क्षेत्र हेतु निर्धारित सभी लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित किया। हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा में जनसामान्य से अधिक से अधिक संवाद स्थापित करने का सुझाव दिया।

सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने सभी स्टाफ सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम समाप्ति के घोषणा की।

स्वच्छोत्सव अभियान-2025

'स्वच्छोत्सव अभियान 2025' के महाकुंभ में अपनी सार्थक एवं अमिट उपस्थिति दर्ज कराने हेतु यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्वनी कुमार जी के मार्गदर्शन में प्रधान कार्यालय, कोलकाता एवं अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा जादवपुर विश्वविद्यालय के भव्य एवं ऐतिहासिक प्रागंण में 'स्वच्छता ही सेवा' के तहत राष्ट्रव्यापी श्रमदान अभियान 'एक दिन, एक घंटा, एक साथ' को 25 सितंबर, 2025 को सुबह 8 बजे मूर्तरूप दिया गया। स्वच्छता अभियान के साथ-साथ जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रागंण में यूको बैंक द्वारा वृक्षारोपण अभियान भी चलाया गया।

स्वच्छ भारत अभियान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म जयंती के अवसर पर 2 अक्तूबर, 2014 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रव्यापी अभियान है। इस अभियान का उद्देश्य भारत के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाना, लोगों में स्वच्छता और स्वस्थ स्वच्छता संबंधी आदतों के प्रति जागरूकता लाना और औद्योगिक कचरों का आधुनिक प्रबंधन, स्थायी स्वच्छता के प्रयासों को अपनाना, जिससे नागरिकों की भागीदारी से एक स्वस्थ भारत का निर्माण हो सके।

कार्यक्रम में जादवपुर विश्वविद्यालय के आस-पास के क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री राजेन्द्र कुमार साबू ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रति कुलपति (प्रो वीसी) जादवपुर विश्वविद्यालय श्री अमिताभ दत्ता थे। कार्यक्रम में यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री विजयकुमार निवृत्ति कांबले, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण, अंचल प्रमुख, कोलकाता श्री मनीष कुमार, अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्य तथा एनएसएस समन्वयक, श्री अनुपम देव सरकार, एनएसएस केडर एवं जादवपुर विश्वविद्यालय प्रबंधन के स्टाफने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

नराकास सम्मान

दिनांक 20.05.2025 को नराकस (बैंक), कोलकाता की 79वीं छमाही बैठक में अंचल कार्यालय, कोलकाता की राजभाषा अधिकारी सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक को कार्यालय में बेहतरीन कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने हेतु सम्मानित किया गया।

अंचल कार्यालय, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

अंचल कार्यालय, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 57वीं बैठक दिनांक 24.06.2025 को उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री मनीष कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सदस्य सचिव सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने बैठक का संचालन किया।

सामान्य जन के लिए सामान्य बीमा का महत्व

भूमिका :

मानव जीवन अनिश्चितताओं से भरा हुआ है। कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता कि अगला क्षण उसके लिए क्या लेकर आएगा। दुर्घटनाएँ, बीमारियाँ, आग, चोरी, प्राकृतिक आपदाएँ या अन्य अप्रत्याशित घटनाएँ व्यक्ति के जीवन को आर्थिक और मानसिक रूप से प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में सामान्य बीमा व्यक्ति और समाज के लिए एक सुरक्षा कवच का कार्य करता है। यह न केवल हानि की स्थिति में आर्थिक सहारा प्रदान करता है, बल्कि व्यक्ति को जीवन में निडरता और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की शक्ति भी देता है।

सामान्य बीमा क्या है :

सामान्य बीमा, जीवन बीमा से भिन्न होता है। जहाँ जीवन बीमा किसी व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा से संबंधित होता है, वहीं सामान्य बीमा जीवन के अतिरिक्त अन्य जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें स्वास्थ्य बीमा, वाहन बीमा, संपत्ति बीमा, आग बीमा, दुर्घटना बीमा, समुद्री बीमा, फसल बीमा आदि शामिल हैं। ये बीमें सामान्यतः एक निश्चित अवधि (आमतौर पर एक वर्ष) के लिए होते हैं और घटना घटित होने पर बीमा कंपनी हानि की क्षतिपूर्ति करती है।

सामान्य बीमा की आवश्यकता :

भारत जैसे विकासशील देश में अधिकांश लोग निम्न या मध्यम आप वर्ग से आते हैं। किसी भी आकस्मिक घटना की स्थिति में वे आर्थिक संकट में पड़ सकते हैं। ऐसे समय में सामान्य बीमा व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करता है और उसकी आर्थिक स्थिरता बनाए रखता है। बीमा का मूल उद्देश्य जोखिम को साझा करना है -- यानी किसी एक व्यक्ति पर आई हानि को सभी बीमाधारकों द्वारा मिलकर वहन करना।

सामान्य बीमा के प्रकार :

1. स्वास्थ्य बीमा :

बढ़ते चिकित्सा खर्च के कारण स्वास्थ्य बीमा अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह बीमा व्यक्तिया परिवार के अस्पताल खर्च, सर्जरी, दवाओं आदि की लागत को वहन करता है। इससे गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार गुणवत्तापूर्ण इलाज प्राप्त कर पाते हैं।

2. वाहन बीमा :

भारत में मोटर वाहन अधिनियम के अनुसार, हर वाहन का बीमा आवश्यक है। यह बीमा दुर्घटना, चोरी या वाहन क्षति की स्थिति में सुरक्षा देता है। साथ ही, किसी तीसरे व्यक्तिको नुकसान पहुँचने पर भी यह बीमा क्षतिपूर्ति करता है।

3. संपत्ति बीमा :

आग, चोरी, भूकंप या बाढ़ जैसी घटनाओं से घर, दुकान या औद्योगिक इकाईयों को नुकसान पहुँचने पर यह बीमा राहत प्रदान करता है। यह व्यापारियों और गृहस्वामियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

4. फसल बीमा :

किसानों के जीवन में मौसम की अनिश्चितता सबसे बड़ी चुनौती है। सूखा, बाढ़, कीट या अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल नष्ट हो जाने पर फसल बीमा उन्हें आर्थिक सहायता देता है। इससे किसानों को पुनः खेती करने का साहस मिलता है।

5. दुर्घटना बीमा :

यह बीमा किसी दुर्घटना में हुई मृत्यु या अपंगता की

स्थिति में आर्थिक सहायता प्रदान करता है। इससे परिवार की आर्थिक स्थिति सुरक्षित रहती है।

सामान्य बीमा के लाभ :

1. आर्थिक सुरक्षा :

बीमा व्यक्ति को आकस्मिक हानियों से आर्थिक रूप से बचाता है। इससे व्यक्ति और उसका परिवार कठिन परिस्थितियों में भी सुरक्षित रहते हैं।

2. जोखिम का वितरण :

बीमा के माध्यम से जोखिम पूरे समाज में बाँट दिया जाता है। किसी एक व्यक्ति पर हानि का पूरा बोझ नहीं पड़ता, जिससे सामाजिक स्थिरता बनी रहती है।

3. मानसिक शांति :

बीमा होने से व्यक्ति को यह विश्वास रहता है कि किसी भी विपत्ति की स्थिति में उसे सहायता मिलेगी। यह मानसिक संतुलन और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

4. व्यवसायिक स्थिरता :

व्यापारी अपने गोदाम, दुकान या उद्योग का बीमा कराकर नुकसान से बचाव कर सकते हैं। इससे उद्योगों में निरंतरता बनी रहती है और अर्थव्यवस्था को स्थायित्व मिलता है।

5. राष्ट्रीय विकास में योगदान :

बीमा कंपनियाँ जो प्रीमियम राशि एकत्र करती हैं, उसे विभिन्न विकासात्मक कार्यों में निवेश करती हैं। इससे देश की आर्थिक प्रगति में योगदान मिलता है।

सामान्य बीमा का सामाजिक महत्व :

सामान्य बीमा केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह समाज में सुरक्षा और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है। जब व्यक्ति स्वयं सुरक्षित होता है, तो समाज भी अधिक स्थिर और संगठित बनता है। इसके अलावा, बीमा कंपनियों आपदा प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्निर्माण कार्यों में भी सहायक होती हैं।

भारत सरकार की पहलें :

आम जनता तक बीमा का लाभ पहुँचाने के लिए भारत सरकार ने कई योजनाएँ प्रारंभ की है-

1. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना :

यह योजना 18 से 70 वर्ष की आयु के नागरिकों को दुर्घटना बीमा की सुविधा देती है, जिसकी वार्षिक प्रीमियम राशि केवल रु. 20 है। दुर्घटना में मृत्यु या पूर्ण अपंगता की स्थिति में 12 लाख तक का लाभ मिलता है।

2. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना :

यह योजना किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली फसल क्षति की स्थिति में आर्थिक राहत देती है। इससे किसानों को खेती में जोखिम उठाने का साहस मिलता है।

3. आयुष्मान भारत योजना :

इस योजना के अंतर्गत देश के गरीब परिवारों को निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जाता है। यह विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना मानी जाती है।

4. जन धन बीमा योजनाएँ :

प्रधानमंत्री जनधन योजना से जुड़े खाताधारकों को दुर्घटना बीमा और जीवन बीमा का भी लाभ मिलता है, जिससे वित्तीय समावेशन को बल मिला है।

ग्रामीण एवं निम्नवर्गीय लोगों के लिए लाभ :

भारत की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। पहले बीमा केवल शहरी वर्ग तक सीमित था, लेकिन अब सरकारी योजनाओं और डिजिटल माध्यमों से यह गाँव-गाँव तक पहुँच चुका है। किसान, मजदूर, छोटे दुकानदार, रिक्शा चालक और घरेलू कामगार अब बीमा योजनाओं का लाभ ले पा रहे हैं। इससे समाज के निचले तबके में आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हुई है।

सामान्य बीमा से जुड़ी चुनौतियाँ :

1. जागरूकता की कमी :
अभी भी ग्रामीण और गरीब वर्ग में बीमा के प्रति जानकारी और समझ की कमी है।

2. दस्तावेजी प्रक्रियाएँ :
कई बार बीमा दावों की प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली होती है।

3. धोखाधड़ी के मामले :
झूठे दावे या फर्जी दस्तावेजों के कारण बीमा क्षेत्र में पारदर्शिता की समस्या बनी रहती है।

4. कम आय वर्ग के लिए प्रीमियम समस्या :
यद्यपि सरकार ने योजनाएँ सस्ती की है, फिर भी कई लोग नियमित प्रीमियम भरने में कठिनाई महसूस करते हैं।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए आवश्यक है कि सरकार और बीमा कंपनियों मिलकर जागरूकता अभियान, सरलीकृत प्रक्रियाएँ और डिजिटल बीमा सेवाएँ अधिक प्रभावी ढंग से लागू करें।

निष्कर्ष :

सामान्य बीमा आज के युग की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र--सभी को सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करता है। यह केवल एक आर्थिक साधन नहीं, बल्कि एक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली है जो विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को संभाले रखती है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को अपनी आवश्यकता और आय के अनुसार उचित बीमा करवाना चाहिए। जब प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित होगा, तभी समाज और राष्ट्र सुरक्षित एवं सशक्त बन सकेंगे। सामान्य बीमा वास्तव में 'आर्थिक सुरक्षा का आधार' और 'सामाजिक स्थिरता' का स्तंभ है।

मोना फिरोज
प्रबंधक, पार्क स्ट्रीट शाखा

सुविचार

यह मत सोचो कि
मेरे अकेले से क्या होगा?
हर प्रयास महत्वपूर्ण है।

एसएमए खाते : कारण, चुनौतियाँ एवं समाधान

आज के प्रतिस्पर्धी बैंकिंग परिवेश में एसएमए (Special Mention Account) खातों का बढ़ना किसी भी शाखा के लिए एक गंभीर चेतावनी है। एसएमए खाते केवल संभावित ....का संकेत ही नहीं देते, बल्कि शाखा की एसेट क्वालिटी, प्रदर्शन और साख पर भी सीधा प्रभाव डालते हैं। इसीलिए एसएमए खातों की समय पर पहचान, निरंतर निगरानी और त्वरित सुधारात्मक कारवाई शाखा स्तर पर अत्यंत आवश्यक है।

एसएमए खाते बनने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :-**1. ग्राहक पक्ष से जुड़े कारण**

- ईएमआई किस्त का समय पर भुगतान न होना
- नकदी प्रवाह में अस्थायी कमी
- व्यवसाय में मंदी या बिक्री में गिरावट
- एक से अधिक ऋणों के कारण भुगतान में देरी
- ऋण निधि का उपयोग स्वीकृत उद्देश्य के बजाय अन्य कार्यों में लगाना

2. बैंकिंग प्रक्रिया एवं तकनीकी कारण

- कई बार एसएमए खाते ग्राहक की गलती से नहीं, बल्कि बैंकिंग प्रक्रिया में त्रुटियों के कारण बनते हैं--
- ईएमआई मांग तिथि या ईसीएस/एसआई तिथि का गलत चयन
- ईएमआई चक्र और भुगतान में असंगति
- ऋण खाते के खुलने के प्रथम मास में ब्याज संग्रह न होना

प्रोसेसिंग शुल्क, बीमा प्रीमियम, दस्तावेज शुल्क आदि का समय पर संग्रह न होना

- मुख्य परिचालन खाते के स्थान पर द्वितीयक या निष्क्रिय खातों का स्वतः वसूली हेतु जोड़ना
- ईसीएस/एसआई तिथि का ईएमआई मांग तिथि के बाद होना

एसएमए खातों से उत्पन्न शाखा-स्तरीय चुनौतियाँ-

- एसेट क्वालिटी में गिरावट
- संभावित एनपीए में वृद्धि
- शाखा के व्यवसायिक लक्ष्य पर नकारात्मक प्रभाव
- निरीक्षण एवं ऑडिट में प्रतिकूल टिप्पणियाँ
- अतिरिक्त फॉलो-अप

शाखा-स्तर पर एसएमए सुधार की प्रभावी रणनीतियाँ-

- क्रेडिट मॉनिटरिंग कैशबोर्ड एवं ईडब्लूएस पोर्टल का प्रभावी उपयोग
- दैनिक संभावित एसएमए खातों की सूची स्वतः उपलब्धता-
- खातों में कम क्रेडिट टर्नओवर
- डीपीडी मूवमेंट की समय पर जानकारी
- ईएमआई मांग तिथि, ईसीएस तिथि एवं स्वतः वसूली की स्थिति में त्रुटियों की पहचान
- प्राथमिकता आधारित कार्य योजना बनाने में सहायता

2. समय पर पहचान एवं नियमित निगरानी

दैनिक डीपीडी एवं Overdue रिपोर्ट का नियमित विश्लेषण एसएमए, एसएमए-1 एवं एसएमए-2 खाते की अलग-अलग निगरानी अलग स्टाक के द्वारा

- 7 दिन डीपीडी वाले खातों पर तुरंत सुधारात्मक कारवाई

तकनीकी त्रुटियों का तत्काल समाधान

3. ग्राहक संपर्क शाखा की सबसे मजबूत कड़ी

- एसएमए नियंत्रण करने में शाखा द्वारा ग्राहक संपर्क सबसे प्रभावी माध्यम है।
- ग्राहक की भुगतान क्षमता एवं व्यवहार का बेहतर आकलन
- ग्राहक को ईएमआई तिथि, बकाया राशि एवं भुगतान प्रक्रिया की स्पष्ट जानकारी
- ईसीएस फेल होने का अस्थायी वित्तीय कठिनाई की समय रहते पहचान
- स्वतः वसूली एनएसीएच एस आई, ऑनलाइन भुगतान एवं सिबिल स्कोर पर देर से भुगतान के बारे में जानकारी देना

ग्राहकों में यह विश्वास विकसित करना कि बैंक केवल रिकवरी नहीं, बल्कि समाधान के लिए भी साथ है। इस तरह

से हम उनके बैंक मित्र बन सकते हैं।

एसएमए खाते शाखा के लिए चेतावनी संकेत होते हैं, न कि केवल समस्या। यदि इन्हें समय रहते पहचाना जाए और शाखा-स्तर पर प्रणालीगत सुधार, नियमित निगरानी तथा प्रभावी ग्राहक संपर्क अपनाया जाए तो संभावित एनपीए को रोका जा सकता है। क्रेडिट मॉनिटरिंग डैशबोर्ड, ईडब्लूएस पोर्टल का सतत उपयोग, प्रतिदिन सीसी एवं ऋण की डीपीडी की समीक्षा और योजनाबद्ध ग्राहक संवाद एसएमए को नियंत्रित करने की कुंजी है। शाखा के द्वारा सक्रिया, सतर्क और ग्राहक-केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाने पर न केवल एसएमए में कमी आती है, बल्कि एसेट क्वालिटी में सुधार ग्राहक संतुष्टि और शाखा का समग्र प्रदर्शन भी सुदृढ़ होता है।

अविनाश रंजन
प्रबंधक, ऋण निगरानी,
अंचल कार्यालय, कोलकाता

सुविचार

कामयाब लोग बदला नहीं,
बदलाव लाने की सोचते हैं।

प्रभु मिलन की लालसा

हे प्रभु कहाँ तुम छोड़ दिए, क्यूं मुझसे अखियाँ मोड़ लिए।
तुझे याद न आई प्रीत मेरी, सब रीत जो हमसे तोड़ दिए।।

भेजा था कर्ज चुकाने को, अपनों का फर्ज निभाने को।
सब कुछ तो साध दिया हमने, फिर क्या अपराध किया हमने।।

घड़ियाँ बीती दिन-प्रहर बीते, कई वर्ष बीते युग चार हुए।
प्रभु अब तो कृपा करो हम पर, अब नयनन भी लाचार हुए।।

चलते, थकते, गिरते, उठते हर रोज मैं चलता जाता हूँ।
इस राह का अंत नहीं मिलता यह सोच के मैं घबराता हूँ।।

अंखियां जब रोई थी बरबस, एक बूंद प्रेम का पाने को।
कई बार किया अनुरोध तुम्हे, आ जाओ मुझे अपनाने को।।

तुम देख न पाए प्रेम मेरा, चैतन्य मेरा चीत्कार किया।
शायद मैं तेरा कोई नहीं, पर, मैंने तो स्नेह अपार किया।।

एक दिन, मिट्टी का काया टूटेगा, जीवन से माया छूटेगा।
तन मोह भांड जब फूटेगा, जड़-जीव-चराचर लुटेगा।।

तब पास तेरे मैं आऊँगा, फरियाद कई संग लाऊँगा।
विश्राम करूँगा चरणों में, तेरे पास से फिर ना जाऊँगा।।

पवन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
रिटेल हब, अंचल कार्यालय, कोलकाता

कासा शिविर

दिनांक 15.07.2025 शिबानीपुर शाखा द्वारा बीडीओ कार्यालय, फालता में कासा शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंचल कार्यालय, कोलकाता से मनोज कुमार सोनी, मुख्य प्रबंधक, संसाधन उपस्थित थे।

यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला 2024-25

दिनांक 28.01.2025 को अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला 2024-25 का सफल आयोजन किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष, कलकत्ता विश्वविद्यालय डॉ. राजश्री शुक्ला व्याख्यानमाला की मुख्य अतिथि एवं वक्ता थी। व्याख्यानमाला का विषय "महिला सशक्तिकरण" था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अमित राज, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने किया। कार्यक्रम आनलाइन एवं आफलाइन दोनों माध्यम से सम्पन्न हुआ। अंचल कार्यालय के स्टाफएवं अंचलाधीन स्टाफसदस्यों ने कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। कार्यक्रम का संचालन सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने किया।

यूको राजभाषा सम्मान 2024-25
एवं
लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रायोजन

यूको राजभाषा कार्ययोजना, हिंदी कार्यक्रम प्रायोजन के तहत यूको बैंक अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा दिनांक 12.03.2025 को आयोजित 'भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्य "स्वामी विवेकानंद के चिंतन में मानवीय संभावनाएं" विषय पर आयोजित विवेकानंद व्याख्यानमाला को प्रायोजित किया गया। व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता रामकृष्ण मिशन शिल्पमंदिर, बेलुर मठ के आचार्य स्वामी वेदातीतानंद जी थे।

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा निरीक्षण

दिनांक 11.03.2025 को डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र) द्वारा कोलकाता अंचलाधीन एल. एल. आर. सरणी शाखा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। उप निदेशक महोदय का स्वागत करती हुई सुश्री तनिष्ठा चटर्जी, शाखा प्रमुख, एल. एल. आर. सरणी शाखा।

निरीक्षण के दौरान उप निदेशक महोदय ने शाखा में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों की जाँच की। स्टाफ सदस्यों से राजभाषा नीती एवं नियम पर चर्चा की। तकनीकी टूल्स के माध्यम से राजभाषा में कार्यालयीन कार्यों को सुचारू रूप से निष्पादित करना बताया।

निरीक्षण कार्य में सहयोग करने हेतु अंचल कार्यालय से सुश्री पूनम कुमारी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा उपस्थित थी।

सुविचार

प्रत्येक व्यक्ति अपनी सोच का परिणाम है।

साइबर सुरक्षा

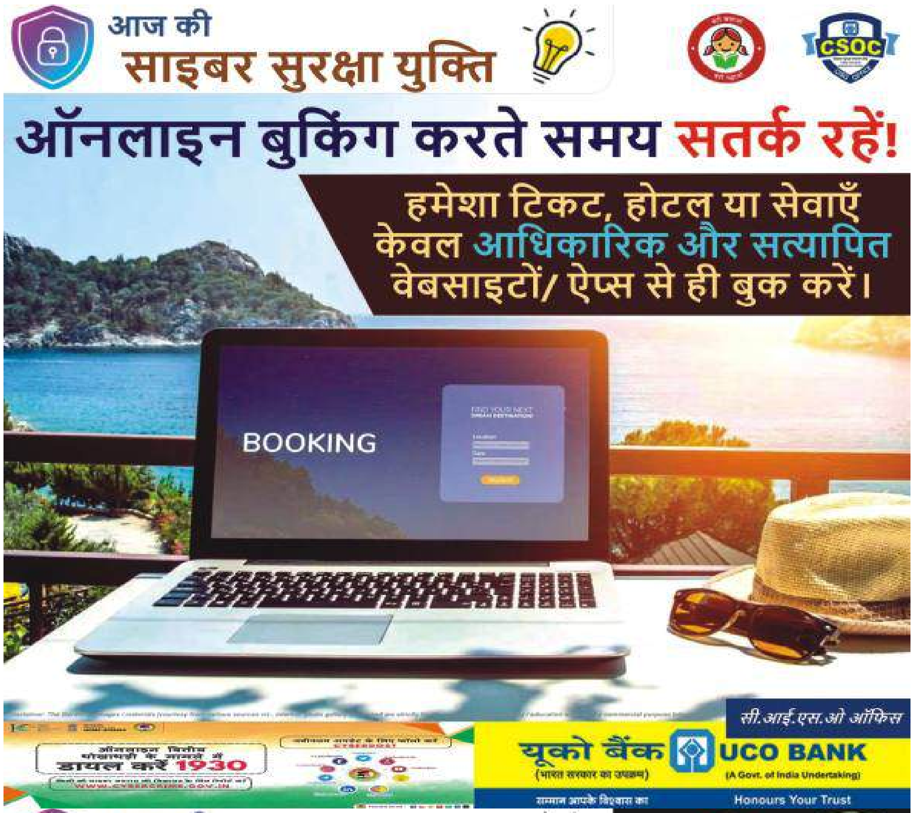
आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
ऑनलाइन बुकिंग करते समय सतर्क रहें!
हमेशा टिकट, होटल या सेवाएँ
केवल आधिकारिक और सत्यापित
वेबसाइटों/ ऐप्स से ही बुक करें।
BOOKING
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
जो दिखता है,
वो हमेशा
सच नहीं
होता है!
धोखेबाज विश्वास जीतने और धोखा देने के लिए
एआई-निर्मित डीपफेक वीडियो का उपयोग करते हैं।
पहले सत्यापित करें और फिर भरोसा करें !
यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
PRIVACY
ENTER
अपने
डिवाइस को
सुरक्षित रखें
अपने मोबाइल की होम स्क्रीन पर मजबूत पासवर्ड लगाकर रखें और अनाधिकृत प्रयोग को रोकने के लिए स्वतः/ ऑटो-लॉक सुविधा का उपयोग करें।
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में डायल करें 1930
यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
भारी रिटर्न
के वादे
वित्तीय नुकसान
का कारण बन सकते हैं !!
हमेशा पूरी तरह जांच करें और एक प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, विश्वसनीय प्लेटफॉर्म के माध्यम से ही स्टॉक ट्रेडिंग करें।
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में डायल करें 1930
यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
सावधान
#आसानपैसा
#झटपटकमाई
#अवैधलेनदेन
अगर कोई आपको कमीशन के बदले अपने बैंक खाते से पैसा ट्रांसफर करने के लिए कहता है, तो वे आपको मनी म्यूल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।
इसके परिणाम गंभीर हो सकते हैं।
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में डायल करें 1930
WWW.CYBERCRIME.GOV.IN
CYBERDOST
यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
बॉस प्रतिरूपण
घोटाले की चेतावनी !
अपने बॉस या वरिष्ठ अधिकारी होने का दावा करने वाले अज्ञात व्हाट्सएप संदेशों पर कार्रवाई न करें।
प्रोफ़ाइल फ़ोटो पर भरोसा न करें।
कभी भी कोई तत्काल वित्तीय लेन-देन या गोपनीय कार्य न करें।
संदिग्ध संचार की रिपोर्ट चक्षु (CHAKSHU) पोर्टल - sancharsaathi.gov.in पर करें।
Today
Messages and calls are end-to-end encrypted. Only people in this chat can read, listen to, or share them. Learn more
Phone number from Canada • Not a contact • No common groups
Safety tools
Block
Add
Hi Vishal, Please get back to me as soon as you get my text, Thanks !
11:05 AM
1 unread message
Are you available at this moment
11:07 AM
फर्जी
ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में डायल करें 1930
WWW.CYBERCRIME.GOV.IN
सी.आई.एस.ओ ऑफिस
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

प्रेरक प्रसंग

चित्रकार की गलती

किसी शहर में एक प्रसिद्ध चित्रकार रहता था। देश-विदेश में उसकी चित्र प्रदर्शनी देखने हजारों लोग आते थे और उसके काम की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। एक बार उसने सोचा कि कहीं ऐसा तो नही कि लोग सिर्फ उसके मुंह पर उसकी तारीफ करते हैं और पीठ पीछे उसके काम में कमी निकालते हैं।

यही सोच कर उसने अपनी बनायी एक मशहूर पेंटिंग सुबह-सुबह शहर के एक व्यस्त चौराहे पर लगा दी और नीचे लिख दिया- जिसे भी इस पेंटिंग में कहीं कोई कमी नज़र आये वह उस जगह एक निशान लगा दे।

शाम को जब वो पेंटिंग देखने चौराहे पर गया तो उसकी आँखें फटी-फटी रह गयीं, पेंटिंग पे सैकड़ों निशान लगे हुए थे. वह बहुत निराश हो गया और चुपचाप पेटिंग उठा कर अपने घर चला गया।

इस घटना का उस पर बहुत बुरा असर हुआ. उसने चित्रकारी करना छोड़ दिया और लोगों से मिलने-जुलने से भी कतराने लगा।

एक दिन उसके किसी दोस्ती ने उसकी निराश का कारण पूछा तब उसने उदास मन से उस दिन की घटना सुना डाली।

मित्र बोला, 'एक काम करते हैं हम एक बार और तुम्हारी बनायी कोई पेटिंग उस चौराहे पर रखते हैं।'

और अगली सुबह उन्होंने चौराहे पर एक नयी पेंटिंग लगा दी। पेटिंग लगाने के बाद चित्रकार उसके नीचे फिर से वही लाइन लिखने जा रहा था कि 'जिसे भी इस पेंटिंग में कहीं कोई कमी नज़र आये वह उस जगह एक निशान लगा दे।'

कि तभी दोस्त ने उसे रोका और कहा इस बार लिखो-

जिस किसी को भी इस पेंटिंग में कहीं भी कोई कमी दिखाई दे उसे सही कर दे।

शाम को जब दोनों दोस्त उस पेंटिंग को देखने गया तो उन्होंने देखा कि पेंटिंग जैसी सुबह थी अभी भी बिल्कुल वैसी की वैसी ही है। दोस्त चित्रकार को देखकर मुस्कुराया और बोला, 'कुछ समझे, कोई भी मूर्ख गलतियाँ निकाल सकता है और ज्यादातर मूर्ख निकालते ही हैं, लेकिन गलतियाँ सुधारने वाले बहुत कम ही लोग होते हैं। बेकार में ऐसे लोगों की राय लेने का कोई फायदा नहीं जो सिर्फ और सिर्फ दूसरों मीन मेख निकालना चाहते हैं। उन्हें नीचा दिखाना चाहते हैं लेकिन उनको सुधारने के लिए न उनके पास समय है और न ज्ञान, इसलिये गलती तुम्हारे चित्र में नहीं बल्कि गलती ऐसे लोगों से सलाह मांगने में है!'

चित्रकार अपने दोस्त की बात समझ चुका था और अब वह दुबारा अपना मनपसंद काम करने लगा वह पेंटिंग्स बनाने लगा।

दोस्तों इस कहानी से हमें कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सीखने को मिलती हैं--

हमें हर किसी से उसकी 'सलाह' नहीं लेनी चाहिए।

यदि हमें सलाह लेनी ही है तो अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ से ही सलाह लें।

हमें वो इंसान बनने से बचना चाहिए जो सिर्फ गलतियाँ निकालना जानता है।

हमें वो इंसान बनना चाहिए जो औरों की गलती को सुधार कर उनके जीवन को सकारात्मक बना सके।

अज्ञात

यूको बैंक
UCO BANK
YEARS OF
THE NATION'S
TRUST
वंदे मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्। सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।1।।
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्, फुल्लकुसुमित
द्रुमदलशोभिनीम्, सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्, सुखदाम्
वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।।2।।
कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले, कोटि-कोटि
भुजैधृत खरकरवाले, के वॉले माँ तुमि अबले, बहुवलधारिणीं
नमामि तारिणीम्, रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ।।3।।
तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म, त्वम् हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि माँ शक्ति, हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि
मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम्।।4।।
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम्, अमलाम्
अतुलाम्, सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।।5।।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्, धरणीम् भरणीम्
मातरम्। वन्दे मातरम् ।।6।।
वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ पर
सभी को हार्दिक शुभकामनाएं
1800 8910 (Toll Free) 8334001234 7666399400 www.uco.bank.in
Follow us on

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

"हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी
यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

यूको बैंक
UCO BANK
83rd YEAR OF THE NATION'S TRUST
UNCLAIMED
FUNDS
Your Money, Your Rightful Claim!
Campaign Period:
01st Oct 2025 to
31st Dec 2025
If you have unclaimed deposits, we'll help you get them back smoothly
Visit your nearest UCO Bank branch or our official website to know more.
1800 8910 (Toll Free)
8334001234
7666399400
Follow us

तमसो मा ज्योतिर्गमय